COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 16, Issue No: 2, Year: 2025 (July-December)
PP: 1-10
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन एवं हिन्दी साहित्य के अवदान

सुभद्रा कुमारी
शोधार्थी (एस.आर.एफ)
Subhadrabgp1998@gmail.com
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा।

शोध सारांश :–

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल और भारतीय स्वाधीनता संग्राम एक दूसरे के पूरक है, हिन्दी साहित्यिक विधाओं, पत्र-पत्रिकाओं, क्रान्तिकारी विचारों इत्यादि के माध्यम से युगान्तकारी अवदान दर्ज करता हुआ जान पड़ता हैं। स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य की महती भूमिका हैं। 'उदन्त मार्तण्ड', 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन', 'आनंद कादम्बिनी', 'सरस्वती', 'प्रताप', 'इंदु', 'जमाना', 'चाँद' जैसी पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्र भक्ति से प्रेरित विचार, निबंध, रचनाओं को मुखर अभिव्यक्ति दी और अन्याय के विरुद्ध सशक्त स्वर में चेतना की अलख जगाई। भारत के विभिन्न हिस्सों को भाषाई स्तर पर हिन्दी को एक सूत्र में बांधा। भारत-दुर्दशा, अंधेर नगरी, चन्द्रगुप्त जैसे नाटकों के माध्यम से युवाओं की चेतना को झकझोर कर रख दिया, वहीं शिवशम्भू के चिट्ठे, चन्द्रदेव से मेरी बातें आदि रचनाओं में स्वप्नभंग और मोहभंग जैसी स्थिति से अंग्रेजी राज्य को फटकार लगाई। दुनिया का सबसे अनमोल रतन, भारत-भारती, झाँसी की रानी, पुष्प की अभिलाषा जैसी रचनाओं ने जनसामान्य के ह्रदय को राष्ट्रप्रेम की भावना से सम्पूटित किय। हिन्दी साहित्य न केवल जन सामान्य से लेकर स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वाले सेनानियों की टंकार बनी अपितु समग्र जनता की समुचित आवाज बनी।

बीज शब्द :राष्ट्रीय चेतना, दशा-दिशा, स्वाधीनता संग्राम, बलिदान, संप्रदाय

प्रस्तावना–

भारतीय आर्यभाषा का प्राचीन रूप ऋग्वेद में सुरक्षित है। लौकिक संस्कृत ने उच्चारण और व्याकरण में एकरूपता लाने की चेष्टा तो की, किंतु भाषा बहता नीर है और उसमें परिवर्तन अनिवार्य है। मध्यकालीन आर्यभाषा की तीन स्थितियाँ बतायी जाती हैं- पालि, साहित्यिक प्राकृत (शौरसेनी, महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी आदि) और अपभ्रंश; किंतु वास्तव में अपभ्रंश एक पश्चिमी प्राकृत ही थी। जो भाषा आज हिंदी नाम से जानी जाती हैं, इसकी यात्रा का आरम्भ लगभग 3500 सौ वर्ष पहले वैदिक संस्कृत से होते हुए, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आदि के सफर के बाद तय की गई हैं। इस यात्रा के साथ ही साथ मनुष्य जनसामान्य की चित्तवृत्ति, संवेदना, संस्कृति, सभ्यता, संस्कार के वहन का दायित्व निर्वहण करती भाषा हर युग में साहित्य के नाम से दर्ज हुई है। "यह

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

हिन्दी ऐतिहासिक दृष्टि से युग-युग की मध्यदेशीय भाषाएँ यथा -संस्कृत, पालि, प्राकृत की उत्तराधिकारणी है, ये भाषाएँ मध्यदेशीय होते हुए भी देशव्यापी रही है"।[1] धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक परिस्थितियों ने हिन्दी को एक व्यापक क्षेत्र में विस्तारित होने का अवसर दिया है। सन् 1800 ईस्वी मे फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के साथ भाषा आधारित साहित्य का संकलन, संरक्षण का और पुनर्लेखन आरंभ हुआ, यहाँ से खडी बोली हिन्दी अर्थात हिन्दी के विकासक्रम के आधुनिक काल का स्वरूप स्थिर हुआ। प्रेस, शिक्षा, व्याकरणिक विश्लेषण आदि के प्रभाव से हिन्दी व्याकरण का रूप काफी स्थिर हो गया हैं। फोर्ट विलियमा कॉलेज के अध्यापकों से देशभाषा में पाठ्य पुस्तकें, कोश और व्याकरण, तैयार करने का काम भी लिया गया। हिंदी का पहला पत्र उदत मार्तण्ड 1826 ई० में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। हिन्दी का दैनिक पत्र समाचार सुधावर्षण (1854 ईस्वी) श्यामसुंदर सेन के संपादकत्व में कलकत्ता से ही निकला। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध मे पत्र-पत्रिकाओं के लगातार बढ़ रहे प्रकाशन से नये विचारों के आदान प्रदान में सुविधा हुई। समाज में फैले विगलित नैतिक रुढ़ियों के विरोध में, देशहित के विरुद्ध हो रही अंग्रेजी हुकूमत की कार्यवाहियों के विरोध में तथा राष्ट्रीयता के प्रसार प्रचार में भी पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। प्रेस (मुद्रणालयों) का प्रभाव भारतीय पुनर्जागरण एवं साहित्य के लिए भी अत्यंत हितकर सिद्ध हुआ। समाज की रुढियों पर प्रहार करती हुई राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में इन पत्र-पत्रिकाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा। 1857 ई० में अंग्रेजी नीतियों से से असंतुष्ट देशी राजाओं ने एकजुट होकर व्यापक स्तर पर विद्रोह किया, अंग्रेजों ने अपनी आर्थिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक नीतियों में परिवर्तन किया। नये संदर्भ में कुछ नया सोचने और करते हुए साहित्य मनुष्य के बृहत्तर सुख-दुख के साथ पहली बार जुड़ा।"अंग्रेजी सभ्यता के संपर्क में आने के बाद, खासतौर पर 1857 के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन के बाद शुरू हुआ जिसका केन्द्र खास तौर पर बंगाल था। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी जैसे विविध आंदोलन तथा विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, ईश्वरचंद विद्यासागर, महर्षि अरविन्द आदि विचारक इसके प्रमुख सत्रधार है"।[2] 1828 ईस्वी में ब्रह्म समाज की स्थापना का नया युग आरंभ हुआ, शिक्षा की नीति 1834 ई० में मैकाले का घोषणापत्र आने के बाद परिवर्तित हुई।सरकार द्वारा 1844 ईस्वी से 1856 ई. तक देश के दूर-दूर भाग रेल और तार से संबद्ध कर दिए गए। संस्थागत प्रयासों (ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज आदि) से सती- दाह, कन्या-वध, विधवा-विवाद आदि अनेक कुप्रथाओं का विरोध हुआ। 1875 ई॰ मे 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज, शिक्षा, साहित्य और समूची संस्कृति को बहुत अधिक प्रभावित किया। "इस संस्था ने अपने महान संस्थापक स्वामी दयानन्द के नेतृत्व में रुढिवादी सनातनियों से, हिन्दुधर्म पर आक्रमण करने वाले ईसाइयों से और देश में फैले हुए अनेक धार्मिक संप्रदायों से एक साथ ही लोहा लिया"।[3] इस वाद-विवादों, कटाक्षों और व्यंग्यों से भाषा की दशा एवं दिशा का योगदान आदी सामाजिक और धार्मिक आदोलन की ओर मुखर हुआ।नये युग में अपनी अभिव्यक्ति के लिए नयी भाषा की खोज के रूप में खडी बोली को समर्थन मिला।हिन्दी स्वराज्य (1909ईस्वी) में व्यक्त महात्मा गाँधी जी ने भारतीय एकता, अखंडता एवं समरसता को ध्यान में रखते

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

हुए अपने विचार व्यक्त किये "हर एक पढ़े-लिखें हिंदुस्तानी को अपनी भाषा का, हिन्दू को संस्कृत का, मुसलमान को अरबी का, पारसी को पर्शियन का, और सबको हिन्दी का ज्ञान होना चाहिए"।[4] साहित्यकारों और पत्रकारों ने अपनी लेखनी से स्वाधीनता आंदोलन को वैचारिक पृष्ठभूमि एवं शक्ति प्रदान की। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतेन्दु युग के साथ साहित्य की दृष्टि से आधुनिक काल का आरंभ हुआ, राष्ट्रीयता और स्वाभिमान की इच्छा प्रबल हो गई हैं। जो एक ओर रुढि, परंपराओं और अंधविश्वासों के विरुद्ध अपनी अभिव्यक्ति को स्वर दे रहे थे, तो दूसरी और राष्ट्रीयता की अलख प्रज्वलित कर रहे थे। साहित्य में राष्ट्रप्रेम, भारतवर्षोन्नति आदि की अभिव्यक्ति प्रसारित हुई। "भारतेन्दु की 'विजयिनी विजय वैजयंती', प्रेमघन की 'आनंद अरुणोदय', प्रतापनारायण मिश्र की 'महापर्व' 'नया संवत्' तथा राधाकृष्णदास की 'बारहमासा' और 'विनय' शीर्षक कविता देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त है"।[5]अंग्रेजों के शोषण नीति की उल्लेख करते हुए भारतेन्दु की पंक्तियाँ निम्न हैं:-

"अंग्रेज राज सुख- साज सबै सब भारी,

पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी"।

"अंधाधुंध मच्यों सब देसा,

मान्हु राजा रहत विदेशा"।

शासन सत्ता का अंधापन और अंधेर 'अंधेर नगरी' नाटक में तथा 'भारत दुर्दशा' में तत्कालिन संदर्भ ब्रिटिश राज का अन्याय है। भारतेन्दु ने अंग्रेजी शासन की अंधेरगर्दी का खुलकर वर्णन किया है। भारतेन्दु ने हरिश्चन्द्र मैग्जीन में हिन्दी की नई चाल के व्यवहारिक रूप की दिशा स्थापित करते हुए कहा "हिन्दी नई चाल में ढली"।

हाय!वहैं भारत- भुव भारी। सब ही विधि सों भई दुखारी।

बोरहु किन झट मथुरा कासी? धोवहु यह कलंक की रासी॥

रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई।

हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥

स्पष्टतः इन जैसी पंक्तियों/रचनाओं के माध्यम से आत्मगौरव एवं आत्माभिमान पर कुठाराघात करते हुए चेतना को जागृत करने की अर्थात समाज में नई जागरूकता उत्पन्न की। 19 वीं-20वीं शताब्दी का काल कई दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, जो न केवल बदलती हुई परिस्थियों का साक्ष्य बना बल्कि सामाजिक विसंगतियों से लेकर पराधीनता के बेड़ियों से लोहा लेने तक की शक्ति को संगठित किया।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले लेख, निबंध वैचारिक आलोचना आदि समाज के प्रत्येक सामान्य जन तक पहुँच कर उनके संगठित जागृत करने का सफल माध्यम बना। चाहे बात 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' की हो या 'सरस्वती' की या फिर 'हरिजन' यंगइण्डिया, प्रताप, आज, कर्मवीर, हिन्दी नवजीवन, अभ्युदय (1907) आदि की, सभी ने क्रांति का मशाल फूंक कर लोगों को स्वाधीनता संग्राम में बराबर प्रतिभागी बनाया।

सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में

"मैं कुंजी कहता हिन्दी को,

खुलता जिससे सामूहिक मन।

क्षेत्रवृत्ति से उठकर ही

हम कर सकते जब राष्ट्र संगठन"।

"भीतर-भीतर सब रस चूसै,

हंसि- हंसि के तन-मन-धन मूसै।

ज़ाहिर बातन में अति तेज,

क्यों सखि सज्जन ! नहिं अंगरेज"।

प्रतापनारायण मिश्र ने एक गज़ल में देश की दुर्दशा पर गहरी चिंता प्रकट की :

"अभी देखिए क्या दशा देश की हो, बदलता है रंग आसमां कैसे कैसे।"

समाज की पीड़ा को व्यक्त करते हुए मिश्र जी लिखते है-

"तबहिं लख्यो जहं रह्यो एक दिन कंचन बरसत।

तहं चौथाई जन रूखी रोटिहु को तरसत"॥

"नौन तेल लकरी घासहु पर टिकस लगे जहं।

चना चिरौंजी मोल मिलें जहं दीन प्रजा कहें॥

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

अंग्रेजी राज पर प्रत्यक्षतः करारा प्रहार करते हुए मिश्र जी कहते हुए जान पड़ते हैं-

"चहहु जु सांचहु निज कल्याण, तौ सब मिलि भारत संतान।

जपो निरंतर एक जवान, हिन्दी हिन्दू हिंदुस्तान"॥

यह पंक्ति केवल चंद वाक्य न होकर पुरे भारत का आवाह्न मंत्र बन अंतर्तम की वाणी बनी।

भारतेन्दु युग में जो राष्ट्रीयता की बीज बोई गई, दिवेदी युग मे वो अंकुरित हुई, "भारतेन्दुयुगीन साहित्यकार जहां भारत-दुर्दशा पर दुःख प्रकट करके रह गया था, वही द्विवेदीकालीन कवि- मनीषियों ने देश की दुर्दशा के चित्रण के साथ-साथ देशवासियों को स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रेरणा भी दी, उन्हें आत्मोत्सर्ग एवं बलिदान का मार्ग भी दिखाया"।[6] इस युग की प्रायः सभी कवियों ने अपनी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के स्वर को प्रबल किया। पराधीनता को सबसे बड़ा अभिशाप बताकर देशभक्तिपूर्ण कविता का प्रणयन किया। कवि नाथूराम शर्मा 'शंकर' के शब्दों में 'बलिदान-गान' से उद्धृत पंक्ति है -

"देशभक्त वीरो, मरने से नेक नही डरना होगा

प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा"।

ठाकुर गोपालशरण सिंह की पंक्तियों में देश की हीन-दशा पर क्षोभ व्यक्त किया हैं :

"वह धीरता कहाँ है, गंभीरता कहाँ हैं?

क्या हो गयी कलाएँ कौशल सभी हमारे? कितने शताब्दी की ली छीन सब कमाई"?

जगदम्बा प्रसाद 'हितैषी' की गर्जन भरी पंक्तियाँ राष्ट्रप्रेम की भावना से अनुस्यूत हैं।

"वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है

सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तिहाँ होगा।

शहीदों की चिताओं पर लगेगें हर बरस मेले
वतन पर मरनेवालों का यही बाक़ी निशाँ होगा।

कभी वह दिन भी आएगा जब अपना राज देखेंगे

जब अपनी ही ज़मीं होगी और अपना आसमाँ होगा"।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

मैथिलीशरण गुप्त की ओजस्वी हुंकार भरे शब्द स्वदेश-संगीत में व्यक्त हुई हैं:-

"धरती हिल कर नीद भगा दे, वज्रनाद से व्योम जगा दे"

"मेरा दुर्लभ देश आज यदि अवनति से आक्रान्त हुआ,

अंधकार में मार्ग भूलकर भटक रहा है भ्रान्त हुआ।

तो भी भय की बात नहीं है भाषा पार लगावेगी,

अपने मधुर स्निग्ध, नाद से उन्नत भाव जगावेगी"॥

भारत-भारती में कवि ने अपनी राष्ट्रीय भावना की एक रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए जागरण के स्वर में अभिव्यक्त किया है:

"हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी

आओ, विचारें आज मिल कर ये समस्याएं सभी"।

श्रीधर पाठक पराधीनता की बेड़ियों को अपमान एवं पशुत्व भाव का पर्याय मानते हुए कहते हैं-

"पराधीन रहकर अपना सुख शोक न कह सकता है,

यह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता हैं"।

बालमुकुन्द गुप्त राष्ट्रीय दृष्टिकोण के प्रवक्ता रहे। ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि वाइसराय को सीधे-सीधे, खरी शैली में 'वाइसराय का कर्तव्य' शीर्षक से बात करते हैं, 'शिवशम्भू के चिट्टे' में गुप्त जी ने तीखेपन और शिष्टाचार का समन्वय किया हैं।

"बड़ी धूम से टेसू आए, लड़के लाड़ी साथ लगाए,

होगा दिल्ली में दरबार, सुनकर चौक पड़ा संसार"।

प्रेमचंद की कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' जो 'सोजेवतन' काव्य-संग्रह में 1907 में प्रकाशित हुई, अंग्रेजों द्वारा अपने राष्ट्रीय चेतना के कारण जब्त कर ली गई। राष्ट्रीय- सांस्कृतिक काव्य में दो भावनाएं पूरी शक्ति के साथ व्यक्त हुई- एक ओर तो कवियों ने भारत की आंतरिक विषमताओं-विसंगतियों को दूर करने का तथा दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में प्रतिभाग करने की प्रेरणा दी।माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

और सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि कवियों ने राष्ट्रप्रेम को मुखरित किया और स्वयं देश की इस लड़ाई में भाग भी लिया। माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "कैदी और कोकिला' में व्यक्त भाव इस प्रकार है..

"क्या? देख न सकती जजीरों का गहना ?

हथकडियाँ क्यों? यह ब्रिटिश राज्य का गहना,

कोल्हू का चर्रक चूर जीवन की तान,

गिट्टी पर लिक्खे अंगुलियों ने गान?

हूं मोट खींचता लगा पेट पर जूआ,

खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुआं"।

वहीं चतुर्वेदी जी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' क्रांतिकारियों एवं वीर शहीदों की कंठाहार स्वर बनी-

"मुझे तोड़ लेना वनमाली!

उस पथ पर तुम देना फैंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने

जिस पथ जावे वीर अनेक"।

\बालकृष्ण शर्मा नवीन' ने भी देश के युवकों को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर मर मिटने के लिए प्रेरित करते हुए कहा है,

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए"।

"है बलिवेदी, सखे प्रज्वलित माँग रही ईंधन क्षण-क्षण,

आओ युवक, लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईधन"॥

सुभद्रा कुमारी चौहान जी की त्रिधारा, मुकुल, झांसी की रानी आदि कविताओं में प्रखर राष्ट्रप्रेम मुखरित होता हैं। बलिदान की प्रेरणा देते हुए सुभद्राकुमारी चौहान कहती है:

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

"विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र, पाप से असहयोग ले ठान।

गुंजा डाले स्वराज्य की तान, और सब हो जावें बलिदान"।

'जालियांवाले बाग में वसंत' कविता में शहीदों की आत्मबलिदान को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए बड़े ही मार्मिक भाव से की गयी कविता की अभिव्यक्ति भारतवासियों के तन-मन को उद्वेलित कर झकझोरती हैं-

"परिमलहीन पराग दाग़-सा बना पड़ा है

हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।

आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना

यह है शौक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर

कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर"।

झाँसी की रानी' कविता समग्र नारी जाति के अंतर्मन की शून्य पड़ती चेतना को जागृत कर अद्वितीय योगदान देकर हिन्दी साहित्य में अविस्मरणीय उपस्थिति अंकित करता हैं-

"दिखा गई पथ, सिखा गई, हमको जो सीख सिखानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी॥

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,

यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,

होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,

हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी, तू ख़ुद अमिट निशानी थी।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।

ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी"॥

निराला जी ने 'दिल्ली' कविता में देश के गौरव के साथ-साथ वर्तमान स्थिति का भी चित्र उकेरा है:-

क्या यह वही देश है।

भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र चिरकुमार भीष्म की पताका,

ब्राह्चर्य-दीप्त उड़ती हैं, आज भी जहाँ के वायुमण्डल में उज्ज्वल अधीर और चिर नवीन"?

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी अपनी' रेणुका, हुँकार, विपथगा आदि काव्य कृतियों द्वारा ब्रिटिश सरकार के प्रति क्रांति का आह्वाहन करते है।

"सदियों की ठंडी-बुझी राख सुगबुगा उठी,

मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है।

दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है"।

वही क्रान्तिकारी भाव से परिपूर्ण वर्तमान स्थिति पर अपनी चुप्पी तोड़ने और एक साथ हुंकार ध्वनि की गर्जना से कहते हैं-

"पाषाण-खंड बन, हम युग-युग तक,

शांत, मौन, निश्चल बैठे;

पर, अब न रहेंगे शांत, न हम,

तुमको न करेंगे अब सह्य"।

अंततः स्पष्ट हैं कि दिनकर की ओजपूर्ण लेखनी तत्कालीन विवशता से जगाने, स्वर बुलंद करने क्रांति की लौ को धधकाने आदि में महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक भूमिका अदा करती हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Referee Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

निष्कर्ष: भारतीय स्वाधीनता आंदोलन मे हिन्दी साहित्य ने अविस्मरणीय भूमिका अदा की है। साहित्य की भिन्न-भिन्न विधाओं, कविता, निबंध, कहानी, आलोचना, व्यंग्य आदि के माध्यम से साहित्यकारों ने गद्य-पद्य में अपनी अभिव्यक्ति से जन-साधारण में चेतना जगाने का कार्य किया। हिन्दी भाषा पुरे भारत के विभिन्न प्रांतो के लोगों को जोड़ने का माध्यम बनी।

सन्दर्भ:

1) बाहरी, डॉ हरदेव, हिन्दी :उद्भव, विकास और रूप, किताब महल, इलाहाबाद, पुनः मुद्रित 1975,पृष्ठ:63

2) डॉ. अमरनाथ, हिन्दी की परिभाषिक शब्दावली,

3) चतुर्वेदी रामस्वरूप, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, पृष्ठ:206

4) कुमार डॉ. कृष्ण, भाषा साहित्य और राष्ट्रीयता, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:2021,पृष्ठ:132-133

5) डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ:440

6) डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ :475

© Copyright @ Authors